International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 6 No. 40 September - October - 2025

महाराष्ट्र और गुजरात की आदिवासी जनजातियों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

प्रो.डॉ.बाबासाहेब कोकाटे[1], डॉ.सुजाता सुर्यकांत हजारे[2]
हिंदी विभागाध्यक्ष, बलभीम महाविद्यालय,बीड
हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड
Corresponding Author –प्रो.डॉ.बाबासाहेब कोकाटे
DOI - 10.5281/zenodo.17657049

प्रस्तावना:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल शहरों और बड़े राजनीतिक नेताओं तक सीमित नहीं था। गाँवों, कस्बों और आदिवासी अंचलों में भी स्वतंत्रता की चिंगारियाँ जल रही थीं। आदिवासी समुदाय, जिनका जीवन जल, जंगल और जमीन पर आधारित था, औपनिवेशिक शासन और सामंती ताकतों से सबसे अधिक प्रभावित हुए। जब अंग्रेजों ने उनके जंगल छीने, भूमि अधिग्रहण किया और कर-प्रणाली थोप दी, तो आदिवासियों ने विद्रोह का रास्ता चुना। महाराष्ट्र और गुजरात की आदिवासी जनजातियों ने अपने क्षेत्रीय नायकों के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी।

महाराष्ट्र की भील जनजाति का परिचय:

भील जनजाति भारत की प्रमुख आदिवासी जातियों में से एक है और महाराष्ट्र में भी इनकी आबादी अच्छी खासी संख्या में पाई जाती है। यह मुख्य रूप से नर्मदा घाटी, सतपुड़ा और विंध्य की पहाड़ियों के आसपास बसे हुए हैं। महाराष्ट्र में भील जनजाति नासिक, धुले, नंदुरबार, जलगांव, और औरंगाबाद जिलों में अधिक संख्या में रहती है।

1. उत्पत्ति और इतिहास:

"भील" शब्द संस्कृत के "भील" या "भिल" से बना है, जिसका अर्थ है धनुष चलाने वाला। प्राचीन समय से भील धनुर्विद्या और शिकार में निपुण माने जाते थे।महाराष्ट्र के साथ-साथ राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश में भी इनकी बड़ी आबादी है।

2. भाषा:

भील लोग "भीली" भाषा बोलते हैं, जो इंडो-आर्यन भाषाओं की एक शाखा है।

महाराष्ट्र के भील मराठी और हिंदी भी समझते व बोलते हैं।

3. जीवन शैली:

परंपरागत रूप से ये जंगल और पहाड़ियों में रहते हैं। आजीविका का प्रमुख साधन कृषि, वनोपज संग्रह (महुआ, तेंदूपत्ता, शहद आदि), मजदूरी और पशुपालन है। झोपड़ीनुमा घर, लकड़ी-बाँस और मिट्टी से बनाए जाते हैं।

4. धर्म और संस्कृति:

भील लोग प्रकृति और पूर्वजों की पूजा करते हैं। इनमें कथा-कहानी, नृत्य और लोकगीत प्रमुख सांस्कृतिक पहचान हैं। त्योहारों में होली, दिवाली,

भगोरिया खास महत्व रखते हैं। भगोरिया का उत्सव मेलों और नृत्यों के लिए प्रसिद्ध है।

5. सामाजिक संरचना:

भील समाज पितृसत्तात्मक है, परंतु स्त्रियों को परिवार और सामाजिक निर्णयों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इनमें गोत्र व्यवस्था पाई जाती है।

6. महाराष्ट्र के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान:

भील जनजाति ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया। क्रांतिवीर गव्या नायक और अन्य भील योद्धाओं ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया। भील रेजिमेंट भी भारतीय सेना का गौरव है।

संक्षेप में, महाराष्ट्र की भील जनजाति एक पुरातन, परिश्रमी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जनजाति है, जो आधुनिकता के साथ धीरे-धीरे शिक्षा, राजनीति और सामाजिक जीवन में आगे बढ़ रही है। महाराष्ट्र की कोली जनजाति भी एक प्राचीन और महत्वपूर्ण आदिवासी/समुदाय है, जो सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से खास पहचान रखती है।

महाराष्ट्र की कोली जनजाति:

1. उत्पत्ति और परिचय:

"कोली" शब्द संस्कृत के "कुल्य" या "कुलीन" शब्द से जुड़ा माना जाता है, वहीं कुछ विद्वान इसे "कोल" जनजाति से उत्पन्न मानते हैं।कोली मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात और कोंकण क्षेत्र में पाई जाती है।महाराष्ट्र में कोली समाज समुद्री तटीय इलाकों और नदी-झील किनारे के क्षेत्रों में अधिक बसता है।

2. भौगोलिक वितरण:

महाराष्ट्र में कोली जनजाति की सबसे अधिक आबादी मुंबई, ठाणे, रायगढ़, पालघर, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, नासिक और पुणे जिलों में मिलती है।इन्हें महाराष्ट्र सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति में शामिल किया गया है।

3. भाषा:

कोली लोग प्रायः मराठी बोलते हैं। कोंकण तटीय क्षेत्रों में कोली लोग "कोली बोली" नामक अपनी स्थानीय बोली का प्रयोग करते हैं।

4. जीवन शैली और आजीविका:

पारंपरिक रूप से कोली जनजाति मछली पकड़ने और नाविकाई (समुद्री यात्रा) के लिए प्रसिद्ध रही है।समुद्र तटवर्ती कोली "मछुआरे" कहलाते हैं, जबकि पहाड़ी व अंदरूनी इलाके वाले कोली "किसान" या "वनवासी" जीवन जीते हैं। वनोपज संग्रह, कृषि, और मजदूरी इनके जीवन का हिस्सा है।

5. धर्म और संस्कृति:

कोली लोग हिंदू धर्म को मानते हैं, परंतु इनमें लोकदेवताओं और प्रकृति पूजा की भी गहरी परंपरा है। प्रमुख देवी-देवता: एकवीरा देवी, तुलजा भवानी, खंडोबा, महासागर (समुद्र देवता)। नृत्य और गीत – कोली समाज अपनी लोककला, खासकर "कोली नृत्य" के लिए जाना जाता है। इसमें नाव और समुद्र की लहरों की गतिविधियों की झलक दिखाई जाती है।

प्रमुख त्योहार: नारळी पौर्णिमा (समुद्र देवता को नारियल अर्पण), होली, गणेशोत्सव।

6. सामाजिक संरचना:

कोली समाज पितृसत्तात्मक है, परंतु स्त्रियों को भी सामाजिक व पारिवारिक निर्णयों में सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। कोली समाज में गोत्र और कुलदेवता की मान्यता है। विवाह व सामाजिक रीति-रिवाज परंपरागत ढंग से संपन्न होते हैं।

7. स्वतंत्रता संग्राम और योगदान:

कोली समाज ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में हिस्सा लिया। 17वीं शताब्दी में छत्रपति शिवाजी

महाराज की नौसेना में कोली नाविकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वतंत्रता आंदोलन में भी कोली समाज के लोग सक्रिय रहे।

8. वर्तमान स्थिति:

आज कोली समाज मछली उद्योग, मत्स्य निर्यात, व्यापार, सरकारी नौकरियों और राजनीति में भी सक्रिय है। मुंबई और कोंकण क्षेत्र में कोली समाज की सांस्कृतिक पहचान "कोली गीत और नृत्य" से अंतरराष्ट्रीय स्तर तक फैली है।शिक्षा और शहरीकरण के कारण कोली समाज का स्वरूप आधुनिक हो रहा है, परंतु उनकी सांस्कृतिक परंपराएँ अब भी जीवित हैं। महाराष्ट्र की कोली जनजाति समुद्र, नदियों और झीलों से गहराई से जुड़ी एक सांस्कृतिक रूप से जीवंत और ऐतिहासिक जनजाति है, जिसने न केवल महाराष्ट्र की संस्कृति को समृद्ध किया है, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक विकास में भी अहम योगदान दिया है।

महाराष्ट्र की आदिवासी जनजातियों का योगदान:

1. भील और कोली जनजाति:

महाराष्ट्र के भील और कोली समुदाय ब्रिटिश शासन के शुरुआती दिनों से ही विद्रोह में सक्रिय रहे।उन्होंने गुरिल्ला युद्ध शैली में अंग्रेजी चौकियों पर हमले किए और सरकारी खजाने लूटकर गरीबों में बाँट दिए।

2. भीमा नाईक (भील नेता):

भीमा नाईक को "भीलों का राणा" कहा जाता है।वे 1857 के विद्रोह में सक्रिय थे और तात्या टोपे जैसे क्रांतिकारियों का सहयोग किया।जंगलों में रहते हुए उन्होंने अंग्रेजों को खूब छकाया और अंततः 1876 में शहादत दी।

3. रामजी गायकवाड़:

रामजी गायकवाड़ ने सातपुड़ा क्षेत्र में आदिवासी युवाओं संगठित कर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया।उनके नेतृत्व में अनेक आदिवासी क्रांतिकारी गतिविधियाँ हुईं।

4. अन्य स्थानीय आंदोलन:

नाशिक, ठाणे और रायगढ़ जिलों के कोली और वारली जनजातियों ने कर-वसूली और जंगल-कब्ज़े के खिलाफ विद्रोह किए।वारली जनजाति का विद्रोह (1945–46) स्वतंत्रता के अंतिम चरण में आदिवासी अस्मिता का सशक्त स्वरूप था।

गुजरात की आदिवासी जनजातियों का योगदान:

1. भील, डांग और गामित जनजाति:

गुजरात की भील, डांग और गामित जनजातियाँ अंग्रेजों की वन नीतियों से सीधा प्रभावित हुईं। इन समुदायों ने 19वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक लगातार आंदोलन चलाए।

2. भील आंदोलन:

1857 के विद्रोह में गुजरात के भीलों ने अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाए। उन्होंने अपने इलाकों में अंग्रेजों की चौकियों और डाकघरों को निशाना बनाया।

3. गोविंद गुरु और भगत आंदोलन (1913):

गोविंद गुरु गुजरात के आदिवासी नेता थे जिन्होंने भील और डांग आदिवासियों को संगठित किया। उन्होंने सामाजिक सुधार और आत्मनिर्भरता का संदेश दिया। 17 नवंबर 1913 को मंगढ़ पहाड़ी (राजस्थान-गुजरात सीमा) पर आदिवासी सम्मेलन के दौरान अंग्रेजों ने गोलीबारी की जिसमें लगभग 1500 आदिवासी मारे गए। इसे "मंगढ़ नरसंहार" कहा जाता

है।यह घटना आदिवासी स्वतंत्रता संघर्ष की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक है।

4. डांग विद्रोही:

गुजरात के डांग इलाके में आदिवासियों ने जंगल पर अधिकार और कर-वसूली के खिलाफ विद्रोह किया। 1922 में यहाँ बड़ा आंदोलन हुआ जिसमें आदिवासियों ने अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी।

स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी संघर्ष की विशेषताएँ:

1. स्थानीय नेतृत्व:

आदिवासी संघर्ष अधिकतर स्थानीय नेताओं द्वारा संचालित हुए (जैसे भीमा नाईक, गोविंद गुरु)।

2. गुरिल्ला युद्ध पद्धतियां:

आदिवासियों ने जंगलों और पहाड़ों में रहकर अंग्रेजों पर अचानक हमले किए।

3. धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना:

संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा का भी माध्यम था।

4. सामूहिक भागीदारी:

महिलाओं और युवाओं ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

5. स्वतंत्रता से पहले ही विद्रोह:

आदिवासी आंदोलनों की शुरुआत 1857 से पहले ही हो चुकी थी।

चुनौतिया:

आदिवासियों के संघर्ष स्थानीय सीमाओं तक ही सीमित रहे, राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें वह मान्यता नहीं मिली जो अन्य नेताओं को मिली। अंग्रेजों की कठोर दमनकारी नीति और हिंसक दमन ने कई आंदोलनों को दबा दिया।मुख्यधारा के इतिहासकारों ने लंबे समय तक आदिवासी योगदान को उपेक्षित किया।

निष्कर्ष:

महाराष्ट्र और गुजरात की आदिवासी जनजातियों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अमूल्य है। भीमा नाईक, गोविंद गुरु जैसे नायकों ने दिखा दिया कि स्वतंत्रता केवल सभ्य समाज का स्वप्न नहीं, बल्कि आदिवासी समाज की भी धड़कन थी। उनके संघर्ष से यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता का सपना तभी पूरा हुआ जब जंगलों, पहाड़ों और गाँवों से उठे आदिवासी योद्धाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी। आज आवश्यकता है कि इतिहास लेखन में इन भूले-बिसरे नायकों को उचित स्थान दिया जाए और आदिवासी समाज की उस वीरगाथा को सम्मान मिले जो उन्होंने स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लिखी।

संदर्भ सूची:

1. ओझा, राजेन्द्र. आदिवासी आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2015.
2. सरकार, सुशील. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास. दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2010.
3. पटेल, आर.के. गोविंद गुरु और मंगढ़ आंदोलन. अहमदाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
4. ठाकुर, अरविंद. भील विद्रोह और आदिवासी प्रतिरोध. मुंबई: साहित्य प्रसारक मंडल, 2017.
5. Government of Maharashtra Archives. Records on Bhil Revolts (1857–1947).
6. Government of Gujarat. Tribal Movements in Gujarat: A Historical Survey. Gandhi Nagar, 2012.